अंडमान द्वीप समूह में नये नौसैनिक अड्डे का सामरिक महत्व

सामान्य अध्ययन – पेपर 3: भारत और उसके पड़ोसी देश , भारत के हितों को प्रभावित करने वाले द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक समूह और समझौते।

कीवर्ड : नौसेना बेस, ग्रेट निकोबार द्वीप, मलक्का जलडमरूमध्य, भूमि-केंद्रित रणनीति, समुद्री भूगोल, बैटलस्पेस, आपत्तिजनक महासागरीय रणनीति।

संदर्भ :

- भारत सरकार ने ग्रेट निकोबार द्वीप पर ख़ुफ़िया तरीके से एक व्यापक नौसैनिक अड्डे का निर्माण करके एक साहसिक, कल्पनाशील और रणनीतिक पहल की शुरुआत की है ।

मुख्य विचार:

- **मलक्का जलडमरूमध्य** के प्रवेश द्वार पर और इंडोनेशिया की जल सीमा से सिर्फ 90 मील की दूरी पर स्थित, यह कदम हिन्द महासागर में भारत की बढ़ती सामरिक उपलब्धि का प्रतीक है।
    - जिबूती और ग्वादर तक फैले हिंद महासागर में, चीन के विस्तार के विरुद्ध यह एक चुनौती है ।
    - **ग्रेट निकोबार पर एक नौसैनिक अड्डे की स्थापना,** हिमालय में चीनी आक्रमण का मुकाबला करने के लिए एक बड़ी समुद्री रणनीति के रूप में एक महत्वपूर्ण रूप से काम करेगा।

- चीन अपने कच्चे तेल की कुल मांग का 65% से अधिक आयात करता है। चीन अपनी हिंद महासागर की संचार लाइनों के लिए आयातित तेल पर निर्भरता के कारण ऊर्जा सुरक्षा की दृष्टि से सुभेद्द है।
    - इस सुभेद्यता को देखते हुए, बीजिंग से सावधानी के साथ हिमालयी एलएसी तक पहुंचने की उम्मीद की जा सकती है।
    - हालाँकि, चीन का दृढ़ विश्वास है कि भारत एक अदूरदर्शी भूमि-केंद्रित रणनीति में उलझा हुआ है और अपने समुद्री भूगोल द्वारा पेश किए गए रणनीतिक लाभों की उपेक्षा करता है।

सामरिक परिदृश्य:

- **मलक्का जलडमरूमध्य और दक्षिण चीन सागर का सामरिक परिदृश्य** वर्तमान में क्वाड द्वारा स्थापित खुफिया जानकारी साझा करने और संचार समझौतों से प्रभावित है।
    - ये समझौते संकट के समय सक्रिय होंगे , जिससे भारत को हिंद महासागर और दक्षिण चीन सागर में संपूर्ण सामरिक तस्वीर तक पहुंच प्राप्त होगी।
    - चीन के आक्रामक कदम के जवाब में, भारत मलक्का जलडमरूमध्य में चीन जाने वाले टैंकरों को रोकने की धमकी दे सकता है।

- ग्रेट निकोबार में अपने नए आधार के साथ, भारत मलक्का जलडमरूमध्य पर सूचना प्रभुत्व स्थापित कर, अपनी स्वयं की वायु पूर्व चेतावनी प्रणाली द्वारा निर्देशित लड़ाकू विमानों का उपयोग कर सकता है।
    - यदि पीएलए टैंकर के ठहराव की जांच के लिए एक टास्क फोर्स भेजने का प्रयास करती है , तो वे भारतीय विमानों और मिसाइल-सशस्त्र जहाजों और पनडुब्बियों के प्रभुत्व वाले रणनीतिक रूप से निर्मित जाल में फंस जाएंगे।

सामरिक गणना:

- भारत, अपने पारंपरिक भूमि-केंद्रित दृष्टिकोण को बदलने के लिए एक नई समुद्री रणनीति के लिए प्रतिबद्ध है या नहीं, यह योजना की सफलता को निर्धारित करेगा।
    - यह भारत के रणनीतिक इरादों के आधार पर एक पूर्ण पर्ल हार्बर के रूप में काम कर सकती है।
    - आने वाले समय में, चीनी आक्रामकता और भारत के साथ वृद्धि के जोखिम को रोकने के लिए एक मजबूत पर्याप्त उपस्थिति प्रदान करेगा।

- यह रणनीति सैन्य मामलों में मौजूदा क्रांति के अनुरूप है , जहां सूचना का प्रभुत्व और दुश्मन को जानकारी से वंचित करना जीत के लिए महत्वपूर्ण है।
    - ग्रेट निकोबार में एक बेस के साथ , भारत की मलक्का जलडमरूमध्य तक पहुंच होगी, जो सिर्फ सौ मील दूर है, जबकि सान्या में निकटतम चीनी आधार 1,500 मील दूर होगा।

- यह चर्चा है कि चीनियों ने ग्वादर से एक प्रमुख ड्रेजिंग अनुबंध प्रदान किया है और उनका इरादा जिबूती के समर्थन में एक विमान वाहक संचालित करना है और इसे ग्वादर में बेस बनाना है।
    - मलक्का जलडमरूमध्य तक पहुंच के साथ, ये योजनाएँ कमज़ोर पड़ जाएँगी।

युद्ध को नियंत्रित करने वाले रणनीतिक नियम:

- भारत की साहसिक कार्रवाई एक बार फिर दर्शाती है कि वर्षों से युद्ध को नियंत्रित करने वाले रणनीतिक नियम नहीं बदले हैं।
    - सिकंदर महान और नेपोलियन जैसे महान सैन्य कमांडरों ने हमेशा अपनी पसंद के आधार पर लड़ाई लड़ी है।

- इसी तरह, समुद्र में, युद्ध के मैदान को चुनने का मतलब एक प्रमुख युद्धक्षेत्र बनाना है जहां सूचना प्रभुत्व हासिल किया जाता है और दुश्मन सूचना के अभाव में कमज़ोर पड़ जाता है।
    - इन शर्तों के तहत, चीनी संख्यात्मक लाभ अप्रासंगिक हो जाता है, जैसा कि यूक्रेन में हाल के संघर्ष से प्रदर्शित होता है।
    - यूक्रेन में, अमेरिकी उपग्रह इंटरनेट के माध्यम से सेल फोन पर स्थानीय उपग्रह सूचना प्लाटून कमांडर के स्तर तक उपलब्ध कराई जाती है।

निष्कर्ष:

- भारत और चीन के बीच मौजूदा स्थिति में , एक डर है कि अगर चीन ऐसा करना चाहे तो संभावित रूप से भारत पर हावी हो सकता है।
    - यह डर निराधार नहीं है , यह सामरिक गणनाओं पर आधारित है।

- हालाँकि, यह गतिशील भारत की रणनीतिक चाल के साथ बदल सकता है। डाउनस्ट्रीम प्रभाव आने वाले वर्षों में परिलक्षित होंगे, जब चीन भारत को एक समान मानना शुरू कर देगा, क्योंकि फिर से सामरिक गणना बीजिंग में सच्चाई को स्पष्ट कर देगी।

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्र. निम्नलिखित में से कौन से भारतीय सैन्य ठिकाने भारतीय क्षेत्र के बाहर स्थित हैं**?**

1. फ़रखोर एयर बेस- ताजिकिस्तान के फ़रखोर शहर के पास स्थित है ।
2. भारतीय सैन्य प्रशिक्षण दल (IMTRAT) – हा पश्चिमी भूटान के जोंग ।
3. अगलागा द्वीप पर एक सैन्य अड्डा ।
4. रास अल हैड में एक लिसनिंग पोस्ट और मस्कट नौसैनिक अड्डे पर बर्थिंग अधिकार।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है**/**हैं ?

a) केवल 1, 2 और 4।
b) केवल 2, 3 और 4।
c) केवल 1, 2 और 3।
d) 1, 2, 3 और 4।

उत्तर: (d**)**

व्याख्या

- **ताजिकिस्तान:** फ़रखोर एयर बेस ताजिकिस्तान के फ़रखोर शहर के पास स्थित है । यह राजधानी दुशान्बे से 130 किमी दक्षिण पूर्व में है। यह ताजिक वायु सेना के सहयोग से भारतीय वायु सेना द्वारा संचालित है। यह विदेशों में भारत का पहला सैन्य अड्डा है। ईरान में चाबहार बंदरगाह भारतीय परिवहन को अफगानिस्तान के रास्ते फ़रखोर एयर बेस तक पहुँचाने की सुविधा प्रदान करता है। **(**इसलिए**,** विकल्प **1** सही है।**)**

- **भूटान:** भारतीय सैन्य प्रशिक्षण दल (IMTRAT) हा (पश्चिमी भूटान के ज़ोंग) में स्थित है । यह भूटान में भारतीय सेना का एक प्रशिक्षण मिशन है। यह रॉयल भूटान आर्मी (आरबीए) और भूटान के रॉयल बॉडीगार्ड (आरबीजी) के कर्मियों के प्रशिक्षण के लिए स्थापित किया गया है। **(**इसलिए**,** विकल्प **2** सही है।**)**

- **मेडागास्कर** : हिंद महासागर में शिपिंग गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए भारत की पहली विदेशी मैरिटाइम कम्युनिकेशन लिशनिंग पोस्ट है जो 2007 में उत्तरी मेडागास्कर में स्थापित की गई थी।

- **मॉरीशस:** भारत इस समय नॉर्थ अगलाएगा आइलैंड पर मिलिट्री बेस बना रहा है। हिंद महासागर में स्थित द्वीप भारत-मॉरीशस सैन्य सहयोग के रूप में रणनीतिक संपत्ति के विकास के लिए भारतीय सेना को पट्टे पर दिया गया है। **(**इसलिए**,** विकल्प **3** सही है**)**।

- **सेशेल्स** : भारत और सेशेल्स ने नौसैनिक अड्डे के निर्माण के लिए एसेम्प्शन द्वीप में एक संयुक्त परियोजना के लिए एक रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए। इसके लिए, भारत ने सेशेल्स को $100m लाइन ऑफ क्रेडिट और डोर्नियर एयरक्राफ्ट दिया। वर्तमान में, भारत सेशेल्स में एक तटीय निगरानी रडार प्रणाली रखता है।

- **ओमान :** भारत के पास रास अल हैड में एक लिसनिंग पोस्ट और मस्कट नौसैनिक अड्डे पर बर्थिंग अधिकार हैं। इसके अलावा, भारतीय वायु सेना और भारतीय नौसेना के लिए दुक्म में एक प्रतिष्ठान है । यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि दुक्म ने पहले आईएनएस मुंबई के लिए एक बंदरगाह के रूप में काम किया था। **(**इसलिए**,** विकल्प **4** सही है**)**।

- **ईरान** : चाबहार बंदरगाह दक्षिण-पूर्वी ईरान में ओमान की खाड़ी पर स्थित है और देश का एकमात्र समुद्री बंदरगाह है। भारत ने दिसंबर 2018 में बंदरगाह का संचालन संभाला।

चूंकि सभी कथन सही हैं, इसलिए सही विकल्प **(**d**)** है।

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्र. भारत द्वारा अंडमान द्वीप समूह में नए नौसैनिक अड्डे की स्थापना कैसे बीजिंग को अपनी रणनीति की समीक्षा करने के लिए बाध्य करेगी। चर्चा कीजिये। (150 शब्द)

स्रोत: द इंडियन एक्सप्रेस